

अशोक के धम्मलेखों में निहित नैतिक मूल्यों और आधुनिक भारतीय कूटनीति का विश्लेषण

रीतू¹, डॉ. यशपाल^{*2}

¹पी. एच. डी. शोध छात्रा, सम्राट अशोक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002

²सहायक आचार्य, भाषा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002

Article Received: 12 September 2026

Article Revised: 02 October 2026

Published on: 22 October 2026

*Corresponding Author: डॉ. यशपाल

सहायक आचार्य, भाषा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250002

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.7530>

शोध सार

सम्राट अशोक की धम्मनीति प्राचीन भारतीय इतिहास में नैतिक शासन, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, मानवीय कल्याण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की एक महत्वपूर्ण विचारधारा के रूप में प्रतिष्ठित है। अशोक के शिलालेखों एवं स्तंभलेखों में निहित धम्म के सिद्धांत केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक सद्भाव, प्रजा के कल्याण, विभिन्न धार्मिक परंपराओं के प्रति सम्मान तथा अन्य राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों की भावना को भी अभिव्यक्त करते हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अशोक के धम्मलेखों में प्रतिपादित नैतिक मूल्यों का विश्लेषण करना तथा आधुनिक भारतीय कूटनीति के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। समकालीन भारतीय विदेश नीति में शांति, संवाद, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सांस्कृतिक संबंध, विकासात्मक साझेदारी और वैश्विक कल्याण जैसे विषयों का विशेष महत्व है। इन विषयों का अशोक की धम्मनीति से वैचारिक साम्य स्थापित किया जा सकता है, यद्यपि प्राचीन साम्राज्य की शासन-व्यवस्था और आधुनिक राष्ट्र-राज्य की विदेश नीति के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक संदर्भ भिन्न हैं। यह अध्ययन ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें अशोक के प्रमुख धम्मलेखों, बौद्ध साहित्य तथा आधुनिक भारतीय विदेश नीति से संबंधित प्रामाणिक स्रोतों का अध्ययन किया जा सकता है। शोध का केंद्रीय तर्क है कि अशोक के धम्मलेख नैतिकता-आधारित शासन, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण संबंधों के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक आधार प्रदान करते हैं। इन मूल्यों का समकालीन कूटनीति के संदर्भ में विश्लेषण भारत की

ऐतिहासिक वैचारिक परंपरा और वर्तमान वैश्विक भूमिका के बीच संबंधों को समझने में सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द: सम्राट अशोक, धम्मलेख, धम्मनीति, नैतिक मूल्य, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, आधुनिक भारतीय कूटनीति, विदेश नीति, सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, वैश्विक शांति।

प्रस्तावना

सम्राट अशोक प्राचीन भारत के उन महान शासकों में से एक थे, जिन्होंने शासन-व्यवस्था में नैतिकता, मानवीयता, अहिंसा और लोककल्याण को विशेष महत्त्व प्रदान किया। कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक के विचारों में आए परिवर्तन ने उनकी शासन-नीति को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने सैन्य विजय की अपेक्षा नैतिक विजय अर्थात् धम्मविजय को अधिक महत्त्व दिया। उनके धम्मलेख इस विचारधारा के प्रमुख ऐतिहासिक स्रोत हैं, जिनमें प्रजा के प्रति दायित्व, सभी धर्मों के प्रति सम्मान, माता-पिता एवं गुरुजनों का आदर, जीवों के प्रति करुणा, सत्यनिष्ठा तथा सामाजिक सद्भाव जैसे नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन मिलता है। इन अभिलेखों का उद्देश्य केवल शासकीय आदेशों का प्रसार करना नहीं था, बल्कि समाज में नैतिक आचरण और मानवीय दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना भी था।

आधुनिक भारतीय कूटनीति का उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय शांति, सहयोग, संवाद और स्थिरता को बढ़ावा देना भी है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, उपनिवेशवाद के विरोध, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, बहुपक्षीय सहयोग तथा विकासशील देशों के साथ साझेदारी जैसे सिद्धांतों को अपनी विदेश नीति में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। वर्तमान समय में सांस्कृतिक संबंध, बौद्ध विरासत, मानवीय सहायता, वैश्विक विकास और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग भी भारतीय कूटनीति के महत्त्वपूर्ण आयाम हैं। इन नीतिगत उद्देश्यों का अशोक के धम्मलेखों में अभिव्यक्त शांति, सहिष्णुता, करुणा और मैत्री के मूल्यों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

अशोक की धम्मनीति और आधुनिक भारतीय कूटनीति के बीच संबंधों का अध्ययन भारतीय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक चिंतन की निरंतरता को समझने का अवसर प्रदान करता है। अशोक के प्रमुख शिलालेखों में धार्मिक सहिष्णुता, अन्य संप्रदायों के प्रति सम्मान तथा नैतिक आचरण पर दिए गए बल से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने सामाजिक शांति और पारस्परिक सम्मान को सुशासन का आवश्यक अंग माना। विशेष रूप से प्रमुख शिलालेख XII धार्मिक सहिष्णुता और विभिन्न संप्रदायों के प्रति सम्मान की दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसी प्रकार, प्रमुख शिलालेख XIII में कलिंग युद्ध के पश्चात् धम्मविजय की

अवधारणा तथा अन्य क्षेत्रों के प्रति नैतिक दृष्टिकोण का उल्लेख मिलता है। ये अभिलेख अशोक की राजनीतिक विचारधारा को समझने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करते हैं।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अशोक के धम्मलेखों में निहित नैतिक मूल्यों का विश्लेषण करना तथा आधुनिक भारतीय कूटनीति के सिद्धांतों और व्यवहार के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का परीक्षण करना है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, संवाद, करुणा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे मूल्य समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों की चुनौतियों के संदर्भ में किस प्रकार उपयोगी वैचारिक दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं। इसके साथ ही, प्राचीन साम्राज्य की धम्मनीति और आधुनिक लोकतांत्रिक राष्ट्र की विदेश नीति के बीच ऐतिहासिक तथा राजनीतिक भिन्नताओं को भी ध्यान में रखा जाएगा। इस प्रकार, यह शोध अशोक के नैतिक आदर्शों और आधुनिक भारतीय कूटनीति के बीच संभावित वैचारिक संबंधों का संतुलित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास है।

1. सम्राट अशोक की धम्मनीति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सम्राट अशोक मौर्य साम्राज्य के प्रमुख शासक थे, जिनका शासनकाल सामान्यतः तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में माना जाता है। उनके शासनकाल में मौर्य साम्राज्य ने राजनीतिक और भौगोलिक विस्तार के साथ-साथ प्रशासनिक एवं नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे। अशोक के जीवन में कलिंग युद्ध एक निर्णायक घटना के रूप में सामने आया। इस युद्ध में हुई जनहानि और व्यापक विनाश ने उन्हें युद्ध की मानवीय लागत पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। तेरहवें प्रमुख शिलालेख में कलिंग युद्ध के प्रति उनके पश्चात्ताप तथा धम्मविजय को प्राथमिकता देने की भावना का उल्लेख मिलता है।

अशोक की धम्मनीति को केवल बौद्ध धर्म के प्रचार तक सीमित करके नहीं देखा जाना चाहिए। उनके अभिलेखों में नैतिक आचरण, प्राणियों के प्रति दया, माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान, सेवकों के प्रति उचित व्यवहार, धार्मिक सहिष्णुता तथा प्रजा के कल्याण पर बल दिया गया है। इस प्रकार धम्म एक व्यापक नैतिक और सामाजिक आचार-दृष्टि के रूप में सामने आता है। अशोक ने अपने अभिलेखों के माध्यम से इन मूल्यों को सार्वजनिक जीवन और प्रशासन का हिस्सा बनाने का प्रयास किया। उनकी यह दृष्टि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में नैतिकता और शासन के संबंध को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

2. अशोक के धम्मलेखों में निहित प्रमुख नैतिक मूल्य

अशोक के धम्मलेख उनके शासन, सामाजिक दृष्टिकोण और नैतिक आदर्शों के अध्ययन के प्रमुख स्रोत हैं। इन अभिलेखों में अनेक ऐसे मूल्यों का उल्लेख मिलता है, जिनकी प्रासंगिकता आज भी सामाजिक संबंधों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के संदर्भ में समझी जा सकती है।

अहिंसा और युद्ध के प्रति संवेदनशीलता: अशोक की धम्मनीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष हिंसा के दुष्परिणामों के प्रति संवेदनशीलता है। तेरहवें प्रमुख शिलालेख में कलिंग युद्ध के बाद उनके पश्चात्ताप और धम्मविजय की प्राथमिकता का उल्लेख है। यह दृष्टिकोण राजनीतिक शक्ति के प्रयोग के मानवीय परिणामों पर विचार करने की प्रेरणा देता है। आधुनिक कूटनीति में विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, संवाद और संघर्षों को कम करने के प्रयासों के साथ इसका वैचारिक साम्य देखा जा सकता है। हालांकि, आधुनिक राज्यों की सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएँ और अशोक के शासन की परिस्थितियाँ अलग थीं।

धार्मिक सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान: अशोक के बारहवें प्रमुख शिलालेख में विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्रति सम्मान तथा वाणी में संयम रखने पर बल दिया गया है। इसमें अपने संप्रदाय की अनुचित प्रशंसा और दूसरे संप्रदाय की निंदा से बचने की भावना व्यक्त होती है। यह विचार विविधता के बीच सह-अस्तित्व और संवाद को प्रोत्साहित करता है। आधुनिक भारतीय कूटनीति में विभिन्न देशों, सभ्यताओं और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ संबंध बनाए रखने की नीति के संदर्भ में यह सिद्धांत उपयोगी तुलनात्मक आधार प्रदान करता है।

करुणा और लोककल्याण: अशोक के अभिलेखों में मनुष्यों और अन्य जीवों के प्रति दया, चिकित्सा संबंधी सुविधाओं तथा जनकल्याणकारी उपायों का उल्लेख मिलता है। दूसरे प्रमुख शिलालेख में मनुष्यों और पशुओं के लिए चिकित्सा की व्यवस्था तथा औषधीय पौधों से संबंधित प्रयासों का वर्णन है। इससे स्पष्ट होता है कि अशोक ने शासन की जिम्मेदारी को केवल प्रशासन और सुरक्षा तक सीमित नहीं माना, बल्कि जनकल्याण को भी महत्व दिया। आधुनिक भारतीय विदेश नीति में मानवीय सहायता, आपदा राहत, स्वास्थ्य सहयोग और विकासात्मक साझेदारी के संदर्भ में इस लोककल्याणकारी दृष्टि की तुलना की जा सकती है।

नैतिक शासन और उत्तरदायित्व: अशोक ने प्रशासनिक अधिकारियों को जनकल्याण और नैतिक आचरण से संबंधित जिम्मेदारियाँ सौंपीं। उनके अभिलेखों में अधिकारियों को प्रजा के हितों के प्रति संवेदनशील रहने तथा प्रशासनिक कार्यों में उत्तरदायित्व निभाने की भावना दिखाई देती है। यह दृष्टिकोण शासन को नैतिक दायित्व से जोड़ता है। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में पारदर्शिता,

प्रतिबद्धताओं का पालन, विकास सहयोग और मानवीय दायित्वों के संदर्भ में इस विचार का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. धम्मविजय की अवधारणा और आधुनिक कूटनीति

अशोक की धम्मनीति में धम्मविजय का विशेष महत्त्व है। सामान्यतः विजय का अर्थ सैन्य शक्ति द्वारा किसी क्षेत्र या राज्य पर अधिकार स्थापित करना माना जाता है, लेकिन अशोक के विचार में नैतिक प्रभाव, सदाचार और धम्म के प्रसार को भी महत्त्व प्राप्त हुआ। तेरहवें प्रमुख शिलालेख में धम्मविजय की अवधारणा का उल्लेख मिलता है। इसमें युद्ध से उत्पन्न पीड़ा के प्रति संवेदना तथा नैतिक विजय की प्राथमिकता को अभिव्यक्ति दी गई है।

आधुनिक भारतीय कूटनीति में भी केवल सैन्य शक्ति के आधार पर संबंधों को परिभाषित नहीं किया जाता। राजनीतिक संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, आर्थिक सहयोग, विकासात्मक साझेदारी और बहुपक्षीय संस्थाओं में भागीदारी अंतरराष्ट्रीय संबंधों के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। भारत विभिन्न देशों के साथ सहयोग के माध्यम से अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के साथ-साथ क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक चुनौतियों के समाधान में योगदान देने का प्रयास करता है।

अशोक की धम्मविजय और आधुनिक कूटनीति के बीच समानता इस बात में देखी जा सकती है कि दोनों के विश्लेषण में प्रभाव स्थापित करने के गैर-सैन्य साधनों का महत्त्व सामने आता है। फिर भी, धम्मविजय को आधुनिक विदेश नीति का प्रत्यक्ष या एकमात्र आधार मानना उचित नहीं होगा। आधुनिक कूटनीति राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हितों, अंतरराष्ट्रीय कानून और बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों से भी प्रभावित होती है। इसलिए अशोक की धम्मविजय को आधुनिक कूटनीति के लिए एक नैतिक एवं ऐतिहासिक संदर्भ के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

4. आधुनिक भारतीय कूटनीति के प्रमुख सिद्धांत

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की विदेश नीति में राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और विकासशील देशों के साथ संबंधों को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला। भारत की विदेश नीति समय के साथ वैश्विक परिस्थितियों, आर्थिक आवश्यकताओं और सुरक्षा संबंधी चुनौतियों के अनुरूप विकसित हुई है। इसके बावजूद संवाद, सहयोग और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भागीदारी इसके महत्त्वपूर्ण आयाम बने हुए हैं।

पंचशील के सिद्धांतों को भारत की शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व संबंधी विचारधारा के संदर्भ में विशेष महत्त्व प्राप्त है। इन सिद्धांतों में एक-दूसरे की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, अनाक्रमण, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता एवं पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व शामिल हैं। इनका ऐतिहासिक विकास आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में हुआ, इसलिए इन्हें अशोक की

धम्मनीति के समान नहीं माना जा सकता। फिर भी, शांतिपूर्ण संबंधों और पारस्परिक सम्मान की व्यापक भावना के स्तर पर दोनों के बीच तुलनात्मक अध्ययन संभव है।

समकालीन भारतीय कूटनीति में आर्थिक सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद-रोधी सहयोग तथा मानवीय सहायता जैसे विषय भी प्रमुख हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक विदेश नीति नैतिक आदर्शों के साथ-साथ व्यावहारिक राष्ट्रीय हितों और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के समन्वय पर आधारित है। अशोक के धम्मलेख इस संदर्भ में यह विचार प्रस्तुत करते हैं कि राजनीतिक शक्ति का प्रयोग नैतिक विवेक और मानवीय संवेदनशीलता से जुड़ा होना चाहिए।

5. धार्मिक सहिष्णुता और भारत की सांस्कृतिक कूटनीति

अशोक के धम्मलेखों में धार्मिक सहिष्णुता और विभिन्न संप्रदायों के प्रति सम्मान का संदेश विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बारहवें प्रमुख शिलालेख में दूसरे संप्रदायों की निंदा से बचने और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देने की भावना मिलती है। यह दृष्टिकोण सामाजिक विविधता को संघर्ष का कारण मानने के बजाय संवाद और समझ के अवसर के रूप में देखने की प्रेरणा देता है।

आधुनिक भारत की सांस्कृतिक कूटनीति में बौद्ध विरासत, ऐतिहासिक स्मारकों, शैक्षिक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और विभिन्न देशों के साथ सभ्यतागत संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत का बौद्ध परंपरा से जुड़ा ऐतिहासिक संबंध श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड, भूटान, जापान, दक्षिण कोरिया और अन्य बौद्ध समुदायों वाले देशों के साथ सांस्कृतिक संवाद के अवसर प्रदान करता है। बौद्ध तीर्थस्थलों और ऐतिहासिक धरोहरों के माध्यम से भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करता है।

इस संदर्भ में अशोक की विरासत एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संसाधन के रूप में देखी जा सकती है। उनके अभिलेख, स्तंभ, स्तूपों से संबंधित परंपराएँ और धम्मविजय की अवधारणा भारत के प्राचीन इतिहास को वैश्विक स्तर पर समझने में सहायता करती हैं। हालांकि, सांस्कृतिक कूटनीति का प्रभाव केवल ऐतिहासिक विरासत पर निर्भर नहीं करता; इसके लिए समकालीन सांस्कृतिक संवाद, शैक्षिक सहयोग और पारस्परिक हितों का भी महत्व है।

6. अशोक की धम्मनीति और भारत की वैश्विक शांति संबंधी दृष्टि

अशोक के धम्मलेखों में युद्ध से होने वाली पीड़ा, नैतिक आचरण और अन्य समुदायों के प्रति सम्मान पर दिया गया बल वैश्विक शांति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। तेरहवें प्रमुख शिलालेख में कलिंग युद्ध के पश्चात् व्यक्त पश्चात्ताप यह संकेत देता है कि किसी भी राजनीतिक विजय का मूल्यांकन केवल क्षेत्रीय विस्तार से नहीं, बल्कि उसके मानवीय परिणामों से भी किया जाना चाहिए। यह विचार आधुनिक विश्व में युद्ध, विस्थापन, मानवीय संकट और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के संदर्भ में विशेष प्रासंगिकता रखता है।

आधुनिक भारत संयुक्त राष्ट्र सहित विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर अंतरराष्ट्रीय सहयोग, विकास, जलवायु परिवर्तन, शांति स्थापना और वैश्विक समस्याओं के समाधान से संबंधित गतिविधियों में भाग लेता है। भारत की विदेश नीति में संवाद और सहयोग के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा तथा रणनीतिक हितों की रक्षा भी महत्वपूर्ण है। इसलिए शांति संबंधी दृष्टिकोण का अर्थ यह नहीं है कि राज्य अपनी सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं की उपेक्षा करे, बल्कि इसका आशय विवादों के समाधान में संवाद, कूटनीतिक प्रयासों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को उचित स्थान देना है।

अशोक की धम्मनीति आधुनिक भारतीय कूटनीति को नैतिक दृष्टि से समझने के लिए उपयोगी ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करती है। यह विशेष रूप से इस प्रश्न को सामने लाती है कि राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए मानवीय मूल्यों और वैश्विक दायित्वों के बीच संतुलन किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार अशोक के विचारों को समकालीन विदेश नीति के प्रत्यक्ष निर्देशों के बजाय नैतिक विमर्श के आधार के रूप में ग्रहण किया जा सकता है।

7. अंतरराष्ट्रीय सहयोग और मानवीय कल्याण की अवधारणा

अशोक की शासन-दृष्टि में प्रजा के कल्याण और मानवीय संवेदनशीलता को महत्व दिया गया था। उनके अभिलेखों में चिकित्सा, औषधीय पौधों, मार्गों के किनारे सुविधाओं तथा प्रशासनिक उत्तरदायित्व से संबंधित उल्लेख मिलते हैं। इनसे संकेत मिलता है कि शासक की भूमिका में जनकल्याण को विशेष स्थान प्राप्त था। यह अवधारणा आधुनिक समय में विकास और मानवीय सहयोग की नीतियों के अध्ययन के लिए तुलनात्मक आधार प्रदान करती है।

आज भारत विभिन्न देशों के साथ विकासात्मक साझेदारी, क्षमता निर्माण, तकनीकी सहयोग, आपदा राहत, स्वास्थ्य संबंधी सहायता और शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से संबंध विकसित करता है। इन प्रयासों का उद्देश्य अलग-अलग परिस्थितियों में सहयोगी देशों की आवश्यकताओं को पूरा करना और पारस्परिक संबंधों को मजबूत करना हो सकता है। इस प्रकार आधुनिक कूटनीति में मानवीय कल्याण केवल नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय सहयोग का व्यावहारिक आयाम भी है।

अशोक की लोककल्याणकारी दृष्टि और भारत की विकासात्मक साझेदारी के बीच तुलनात्मक संबंध स्थापित करते समय दोनों के ऐतिहासिक संदर्भों को ध्यान में रखना आवश्यक है। अशोक का शासन एक प्राचीन साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था पर आधारित था, जबकि भारत की वर्तमान विदेश नीति एक आधुनिक संप्रभु राष्ट्र की संवैधानिक, आर्थिक और रणनीतिक आवश्यकताओं से प्रभावित होती है। इसके बावजूद दोनों के अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि शासन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में मानवीय कल्याण किस प्रकार महत्वपूर्ण विचार के रूप में उभरता है।

8. अशोक के नैतिक मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता

वर्तमान विश्व अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इनमें युद्ध और क्षेत्रीय संघर्ष, धार्मिक असहिष्णुता, सांस्कृतिक तनाव, आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय संकट प्रमुख हैं। ऐसी परिस्थितियों में अशोक के धम्मलेखों में निहित करुणा, संयम, धार्मिक सहिष्णुता और नैतिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य वैचारिक महत्त्व रखते हैं। ये मूल्य विभिन्न समुदायों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करने और राजनीतिक निर्णयों के मानवीय प्रभावों पर विचार करने की प्रेरणा देते हैं।

आधुनिक भारतीय कूटनीति के संदर्भ में इन मूल्यों की प्रासंगिकता तीन प्रमुख स्तरों पर समझी जा सकती है। पहला, विवादों के समाधान में संवाद और शांतिपूर्ण उपायों की प्राथमिकता। दूसरा, विभिन्न संस्कृतियों और धार्मिक परंपराओं के प्रति सम्मान के माध्यम से सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करना। तीसरा, अंतरराष्ट्रीय सहयोग में विकास, मानवीय सहायता और साझा वैश्विक चुनौतियों के प्रति उत्तरदायित्व को महत्त्व देना।

हालांकि, नैतिक मूल्यों को विदेश नीति में लागू करना हमेशा सरल नहीं होता। देशों के बीच हितों का टकराव, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और शक्ति-संतुलन की राजनीति कूटनीतिक निर्णयों को प्रभावित करती हैं। इसलिए अशोक की धम्मनीति का समकालीन महत्त्व उसके आदर्शों को यथार्थवादी परिस्थितियों के साथ जोड़कर समझने में है। यह दृष्टिकोण भारतीय कूटनीति के नैतिक आयामों का मूल्यांकन करने और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में मानवीय संवेदनशीलता की भूमिका पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है।

9. तुलनात्मक विश्लेषण: समानताएँ और भिन्नताएँ

अशोक के धम्मलेखों और आधुनिक भारतीय कूटनीति का तुलनात्मक अध्ययन कुछ वैचारिक समानताओं तथा महत्वपूर्ण भिन्नताओं को सामने लाता है।

तुलनात्मक आधार	अशोक की धम्मनीति	आधुनिक भारतीय कूटनीति
शांति	युद्ध के दुष्परिणामों के प्रति संवेदनशीलता और धम्मविजय पर बल	संवाद, शांतिपूर्ण समाधान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग
सहिष्णुता	विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्रति सम्मान	विविध देशों और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ संवाद
लोककल्याण	प्रजा, मनुष्यों और जीवों के कल्याण पर बल	विकासात्मक साझेदारी, मानवीय सहायता और वैश्विक सहयोग
नैतिकता	सार्वजनिक आचरण और शासन में धम्म के सिद्धांत	अंतरराष्ट्रीय दायित्वों, सहयोग और कूटनीतिक प्रतिबद्धताओं का महत्त्व
संबंधों का आधार	प्राचीन साम्राज्य की शासन-व्यवस्था और नैतिक प्रभाव	राष्ट्रीय हित, संप्रभुता, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और बहुपक्षीय सहयोग

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि अशोक की धम्मनीति और आधुनिक भारतीय कूटनीति के बीच शांति, सहिष्णुता और कल्याण जैसे व्यापक मूल्यों के स्तर पर संबंध स्थापित किए जा सकते हैं। परंतु दोनों की प्रकृति और कार्यक्षेत्र समान नहीं हैं। अशोक की नीति एक प्राचीन शासक की नैतिक शासन-दृष्टि से संबंधित थी, जबकि आधुनिक विदेश नीति संवैधानिक व्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय कानून, राष्ट्रीय हितों और वैश्विक शक्ति-संबंधों से प्रभावित होती है।

इसलिए यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि अशोक के धम्मलेख आधुनिक भारतीय कूटनीति की प्रत्यक्ष उत्पत्ति या पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि वे भारतीय ऐतिहासिक चिंतन में नैतिक शासन, धार्मिक सहिष्णुता और शांतिपूर्ण संबंधों की परंपरा को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

10. निष्कर्षात्मक विवेचन

अशोक के धम्मलेखों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि उन्होंने शासन में नैतिकता, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता और लोककल्याण को महत्वपूर्ण स्थान दिया। कलिंग युद्ध के पश्चात् धम्मविजय पर उनका बल राजनीतिक विजय की मानवीय सीमाओं और नैतिक विकल्पों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है। बारहवें प्रमुख शिलालेख में धार्मिक सहिष्णुता तथा तेरहवें प्रमुख शिलालेख में युद्ध के पश्चात्ताप और धम्मविजय की भावना इस दृष्टि के विशेष उदाहरण हैं।

आधुनिक भारतीय कूटनीति के साथ इन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन शांति, सांस्कृतिक संवाद, विकासात्मक सहयोग और वैश्विक कल्याण के संदर्भ में उपयोगी है। फिर भी, समकालीन विदेश नीति को केवल प्राचीन नैतिक आदर्शों के आधार पर नहीं समझा जा सकता, क्योंकि इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक हितों, संप्रभुता और बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों की भी निर्णायक भूमिका होती है।

अतः अशोक के धम्मलेखों की समकालीन प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि वे राजनीतिक शक्ति और नैतिक उत्तरदायित्व के संबंध पर विचार करने की प्रेरणा देते हैं। उनका अध्ययन भारतीय कूटनीति के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों को समझने के साथ-साथ यह प्रश्न भी उठाता है कि आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रीय हितों और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बाशम, ए. एल. द वंडर दैट वाज़ इंडिया। तृतीय संस्करण, रूपा, 2004
2. भंडारकर, डी. आर. अशोक। कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1932

3. धम्मिका, एस. द एडिक्ट्स ऑफ किंग अशोक: एन इंग्लिश रेंडरिंग। बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसाइटी, 1993
4. गोखले, बालकृष्ण गोविंद। अशोक मौर्य। एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1966
5. हुल्श, ई. इन्सक्रिप्शन्स ऑफ अशोक। क्लैरेंडन प्रेस, 1925
6. कांगले, आर. पी. द कौटिलीय अर्थशास्त्र। भाग 3, बॉम्बे विश्वविद्यालय, 1965
7. लॉन्ग, विलियम जे. ए बुद्धिस्ट अप्रोच टू इंटरनेशनल रिलेशन्स: रेडिकल इंटरडिपेंडेंस। पालग्रेव मैकमिलन, 2021
8. मजूमदार, आर. सी., संपादक। द हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल: द एज ऑफ इम्पीरियल यूनिटी। भारतीय विद्या भवन, 1951
9. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। इंडिया-चाइना एनसाइक्लोपीडिया ऑफ कल्चरल कॉन्टैक्ट्स। खंड 1, भारत सरकार, विदेश मंत्रालय
10. मुखर्जी, राधाकुमुद। अशोक। मोतीलाल बनारसीदास, 1962
11. सेन, अमृत्यचंद्र। अशोकाज़ एडिक्ट्स। इंडियन पब्लिसिटी सोसाइटी, 1956
12. थापर, रोमिला। अशोक एंड द डिक्लाइन ऑफ द मौर्याज़। तृतीय संस्करण, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012
13. थापर, रोमिला। अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए.डी. 1300। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002